International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.196-200

स्वतंत्रताकालीन समाचार पत्रों में विज्ञापनों का तिलिस्म

डॉ. संगीता नागरवाल*

प्रस्तावना

स्वतंत्रता काल में भारत तथा उसके राज्यों से सूचना संचार के माध्यम के रूप में अनेक समाचार–पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन समाचार पत्रों में प्रमुख थे–बंगाल गजट, दिग्दर्शन, समाचार दर्पण, संवाद कौमुदी, उदंत मार्तण्ड (हिन्दी का प्रथम पत्र), समाचार सुधावर्षण (प्रथम हिन्दी दैनिक) हिन्दू, प्रताप, हिन्दुस्तान, सिपाही, छात्र हितैषी, विद्यार्थी, भारत ज्ञानोदय, वीरभारत, नवजीवन इन्दु, हिन्द केसरी, राजभक्त, भारत जीवन, हिन्दी नवजीवन, आज, दैनिक प्रताप, कर्मवीर, चांद, तरूण भारत, स्वाधीन, धर्मवीर, कर्त्तव्य, प्रकाश, स्वराज्य, वैभव, अर्जुन, स्त्री दर्पण, हिरजन सेवक, आवाज, जागरण प्रभात, उच्छृंखल, सचित्र दरबार, किसान संदेश। राजस्थान से–मजहरूर सरूर, रोजतुल तालिम, जगलाम चिंतक, जगहितकारक, मारवाड़ गजट, सज्जनकीर्ति सुधाकर, जयपुर गजट, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, देशहितैषी, राजपूताना गजट, राजस्थान, सर्वहित, राजस्थान केसरी, राजस्थान संदेश, नवीन राजस्थान, तरुण राजस्थान, रियासती, त्यागभूमि, मीरा नवज्योति, प्रकाश, प्रभात, समालोचक, जयभूमि, जयध्वनि, जयपुर समचार, लोकवाणी, अलवर पत्रिका, स्वतंत्र भारत, तेजप्रताप इत्यादि।

इन समाचार पत्रों ने तत्कालीन समय में सूचना तंत्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक विचारधारा को गहराई से प्रभावित कर एक विशेष दिशा में प्रवाहमान किया। धर्म, शिक्षा, कला, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को जनता के सामने रखा, राष्ट्र की आशाओं और आंकाक्षाओं को वाणी देने का कार्य किया, जागरण की प्रक्रिया को धरा से ऊँचा उठाकर शिखर तक पहुँचाने का पूर्ण प्रयास करते हुए जन–जन को राजनीति की दिशा दिखाई, राष्ट्रीय आंदोलन के प्रत्येक चरण, प्रत्येक पहलु एवं राजनैतिक गतिविधियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय आंदोलन को लोकप्रिय बनाने, उसके प्रत्येक स्वरूप को विकसित करने, जनता को लोकतांत्रिक संस्थाओं से अवगत कराने, सरकार की नीतियों की समीक्षा कर जनता को प्रभावित करने, जनमत के निर्माण तथा विभिन्न दलों के विचारों से भारतीयों को परिचित कराने, देश के विभिन्न भागों में सामाजिक वर्गों के मध्य एक मानसिक संबंध स्थापित करने, राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों को सफल बनाने में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेकिन समाचार पत्रों के लिए यह भूमिका निभाना कोई आसान कार्य नहीं था प्रकाशकों के सामने अनेकों समस्यायें आई रियासती शासकों व ब्रिटिश सरकार द्वारा समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाया जाने लगा, प्रेस जब्त कर ली गई, भारी–भरकम जमानत राशि थोपी गई। इस प्रकार समाचार पत्रों का प्रकाशन बहुत मुश्किल हो गया। प्रकाशकों के समक्ष आर्थिक समस्या खड़ी हो गई। आर्थिक तंगी के कारण कई पत्रों का प्रकाशन तो असयम ही बंद हो गया। आर्थिक तंगी से दूर होने तथा जन–सामान्य तक प्रचलित व उपयोगी वस्तुओं की जानकारी पहुंचाने हेतु समाचार पत्रों ने विज्ञापनों का सहारा लिया।

विज्ञापन एक आर्ट/कला है, विज्ञान है, अर्थव्यवस्था की गति का आधार है, यह बाजार का अचूक हथियार है। विज्ञापन से किसी भी वस्तु के लिए जादुई तरीके से आकर्षण पैदा किया जाता है। जैसे कि बाजारी अर्थव्यवस्था के अनुसार उपभोक्ता को उन्हीं चीजों की तलब हो जो बाजार उत्पादित करता है। विज्ञापन उपभोक्ताओं को शिक्षित एवं प्रभावित करने के दृष्टिकोण से निर्माताओं, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की

* सह आचार्य इतिहास, एस.आर.पी.राज. स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, बांदीकुई, राजस्थान।

ओर से विचारों, उत्पादों और सेवाओं से संबंधित संदेशों का अव्यक्तिगत संचार है। विज्ञापन का उद्देश्य, वस्तुओं एवं सेवाओं का संवर्द्धन करना होता है। इनके प्रायोजक द्वारा लोगों को वस्तु एवं सेवाओं को खरीदने के लिए प्रेरित करने वाला एक संदेश प्रेषित किया जाता है। इस तरह विज्ञापन संचार का भुगतान किया हुआ एक रूप है। विज्ञापन नए उत्पादों की बिक्री बढ़ाने, वर्तमान क्रेताओं को कायम रखने, कंपनी की कीर्ति स्थापित करने एवं वृद्धि करने, ब्रांड छवि की रचना कर उसे बढ़ाने का काम करता है। यह व्यक्तिगत विक्रय में सहायक होता है। विज्ञापन उत्पादों, मूल्यों गुणवत्ता, बिक्री संबंधी जानकारियों, विक्रय उपरांत सेवाओं इत्यादि के बारे में उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त करने में उपभोक्ता की मदद भी करता है। यह लोगों को अधिक सुविधा, आराम, बेहतर जीवन पद्धति उपलब्ध कराने में सहायक होता है। विज्ञापन समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन इत्यादि की आय का भी प्रमुख स्त्रोत होता है। जितना बड़ा विज्ञापन उतनी अधिक आय और यदि मुख्य पृष्ठ पर है तो ओर अधिक आय। इस प्रकार स्वतंत्रता काल में समाचार पत्र व विज्ञापन एक–दूसरे के सहायक या यूं कहें पूरक बन गये। समाचार पत्रों ने विज्ञापनों को तिलिस्म के रूप में दुनिया के सामने रखा तो विज्ञापनों के प्रयोजकों ने समाचार पत्रों के अस्तित्व को कायम रखने में सहयोग दिया। अर्थात् विज्ञापन मुद्रित मीडिया के अर्थतंत्र की रीढ़ भी रही है। फिर भी स्वतंत्रताकालीन परम्परागत बाजार पूरी दुनिया में इतना आक्रमक नहीं हुआ था जितना की वर्तमान में लेकिन वित्तीय वर्चस्व की आहट मिलने लग गई थी। तत्कालीन समय में समाचार पत्रों में विज्ञापन छपते थे लेकिन यह विज्ञापन शाब्दिक थे चित्र नहीं होते थे लेकिन 1885 के बाद विज्ञापनों का अंदाज बदल गया अब शब्दों के साथ विज्ञापन की तस्वीर भी छापी जाने लगी।

विज्ञापन का कारोबार से सीधा रिश्ता रहा है। 1780 में निकलने वाले देश के पहले समाचार पत्र हिन्दी के बंगाल गजट और कोलकत्ता जनरल एडवरटाइजर या आवास न्यूज एजेंसी तथा राजस्थान से निकलने वाले समाचार पत्रों में भी व्यापारिक गतिविधियों पर खबरें खूब छपती थी। इन विज्ञापनों में कपड़े, शराब, घड़ी, तेल, चाय, जहाज, घोड़े–गाड़ियाँ, प्रेस इत्यादि के विज्ञापन छापे जाते थे।

जैसे कि ''तन पर चाहे कितना भी यौवन फूट पड़ा हो, अंग–अंग पर कांति छितराई हुई हो, आलेपन युक्त अंग हो, होंठ क्यों न ताबूल के समान लाल रचे हों, फूलों से वेणी गुंथी हो और कलियों से मांग भरी हो लेकिन समझदार नारी उस समय तक अपने प्रिय के पास नहीं जाती तब तक वह हमारे द्वारा बुने रेशम का जोड़ा धारण नहीं कर लेती। इसके बिना उसका प्रिय उसे स्वीकार नहीं करेगा।'' यह रेशमी परिधान के लिए संस्कृत में लिखे एक विज्ञापन का सार है यह संसार का पहला विज्ञापन माना जाता है। यह विज्ञापन मध्यप्रदेश के नगर दशपुर के गुप्तकालीन प्राचीन सूर्य मंदिर की दीवारों पर भारतीय बुनकर व्यापारी संघ द्वारा लगवाया गया था। 19वीं सदी से निकलने वाले समाचार पत्रों में भी अदालती नोटिस, मकान, विभिन्न प्रकार के रोगों से निजात दिलाने वाली चमत्कारी दवाओं, पुस्तकों, घड़ी–चश्में, तेल, चूर्ण, प्रेस, विशेषांक, घोड़े का रेस, वर–वधु की आवश्यकता, लालटेन, मोटर, कैमरा, साबुन, ताकत की दवाई, संजीवनी बूटी, बंगाल का जादू, मदन मंजरी गोलियों, फार्मेसी जीवन बिना कंपनी, स्कूल, कलम, शर्बत इत्यादि के विज्ञापन छापे जाते थे जैसे कि 8 अगस्त 1938 के हिन्दू के पृष्ठ 3 पर बड़े आकार में आकर्षक रूप से चित्र सहित भारतीय चाय का विज्ञापन छपा है जो इस प्रकार है सर्वोत्तम तृष्णा निवारण व प्यास बुझाने में चाय का प्याला अपना सानी नहीं रखता। चाहे कितने भी आनन्ददायक बरफ मिले पेय क्यों न हो, वे आपसी प्यास बढ़ाते ही हैं। चाय से आपको स्थायी संतोष प्राप्त होता है, क्योंकि यह आपकी प्यास एकदम बुझा देती है। इसके नीचे चाय का संक्षिप्त इतिहास फिर नीचे मध्य में

भारतीय चाय

आपको शीतल और संतुष्ट रखती है।

इंडियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित मुद्रित है।[1] लड़ाई के बुखार इन्फ्लुएंजा के प्राण रक्षा करने के उपाय 1 रू. में 150 डेढ सो खुराकें इन से सस्ती दवा दूसरी नही। सेवासमितियों द्वारा तार देकर दया

---

[1] हिन्दू, 8 अगस्त, 1938, पृष्ठ 3

मंगवाले। संजीवनी बटी मंगाने का पता, जीव प्रभा औषधालय, कानपुर तथा मकरध्वज औषधि[1] सेंटलीन औषधी इश्तिहार किफायत से बटेंगे, नोटिस[2], उच्छृंखल– काम विज्ञान संबंधी उच्च कोटि का मासिक[3] घंटी, हारमोनियम चंद्रामृत, भारत गवर्मेंट से रजिस्ट्री किया हुआ 25 वर्ष का आममदा बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री पुरूष के सिर से लेकर पैर तक के सब रागों की अचूक दवा महिला के चित्र के साथ[4] ओरायन जीवन बीमा कंपनी बीमा संचार के एकदम नई वस्तु[5] वीरो के संदेश सत्यदेव विद्यलंकार व रामनारायण चौधरी[6] बहरे पान की दवा, कोटे की हाथ से बनी हुई स्वदेशी खादी, सूंघने की तम्बाकू, दर्द विनाशक मलम, धातु पोष्टिक गोली, स्वदेशी माल[7], ताकत ताजगी के लिए झंडू दूक्षासन सुबह और शाम खाने के बाद पियो[8], नया खून, नई ताकत, नई जवानी प्राप्त करना चाहते हो तो तलवार मार्का शर्बत फौलाद नं. 100 सेवन करें जिसकी पहली खुराक से ही नस–नस में ताकत की लहर दौड़ जाती है। शुद्ध खून पैदा हो कर चेहरा कुंदन की तरह दमकने लगता है। भुख खुलकर लगती है। जिस्म फौलाद बनकर मजबूत लोहे की तरह लाट बन जाता है। एकबार खरीद कर जरूर परीक्षा करें। मूल्य 40, हर ऋतु में सेवन कर सकते हैं।[9]

सबसे अच्छी टिकाउ और सफाईदार लीनर टी पुतली छाप के टाईल्स वापरो दीवार और जमीन में लगाने का, हर तरह से सफेद, काला, सादा रंगीन और फूलदार टाइल्स, सफेद काला संगमरमर किफायत भाव से मिलता है, विक्रेता भीगा भाई एण्ड सन्स बम्बई।[10] 19वीं सदी वाले इन समाचार पत्रों में अदालती नोटिस, मकान, विभिन्न प्रकार के रोगों से निजात दिलाने वाली चमत्कारी दवाओं, पुस्तकों चश्में आदि के विज्ञापन भी छापे जाते थे। इन विज्ञापनों मं उर्दू हिन्दी मिश्रित भाषा और बीच बीच में अंग्रेजी के शब्द भी रहते थे। विदेशी विज्ञापन एजेंसियों के हिन्दुस्तान में प्रवेश से अचानक विज्ञापनों का स्वरूप बदल गया। इसलिए अदालती नोटिस के साथ साथ पुस्तक मंगवाने का विज्ञापन, बिकाऊ मकान इत्यादि के विज्ञापन छापे जाते थे तेज प्रताप (अलवर) तो अदाली नोटिस निकालने वाला ही समाचार पत्र बन गया था इसके प्रत्येक अंक में अदालती नोटिस छापे जाते थे। देखिए समसामयिक समाचार पत्रों के कुछ इसी प्रकार के विज्ञापनों के उदाहरण गर्मी और सुपाक तथा बाघी तीनों रोगों की दवा व नोटिस[11], किंग्स ड्राइन जिन किंग्स थ्री एक्स रम[12], डॉ. वामनगोपाल का सासपिरिला (सिद्ध वशीकरण यंत्र)[13] बीमा संसार में अपूर्व क्रांति (एशियन बीमा कंपनी लिमिटेड) आनन्दराज सुराणा चांदनी चौक दिल्ली[14], वेस्ट एण्ड वॉच कंपनी बम्बई और कलकत्ता ँमेजमतद ँजबी ब्वउचंदल) सचित्र[15] प्रजा सेवक के एक साल में चार विशेषांक अभी से रिजर्व करा ले[16], अरोग्यवर्धक 50 साल के दुनियाभर में मशहूर मदनमंजरी गोलियां ब्राह्मी आमला हेयर ऑयल (ब्रेन एण्ड हेयर टोनिक)[17] दी अहमद आयल मिल्स बम्बई भारत के सबसे बढ़िया और सस्ते तेल[18], जोधपुर में लोकमत के सोल एजेंट शर्मा ब्रादर्स[19], आयुर्वेद औषधियों के लिए ऊंझा

---

1 प्रताप, नवम्बर, 1915, पृष्ठ 11
2 प्रताप, 13 दिसम्बर, 1915
3 उच्छृंखल, 8 सितम्बर, 1920, पृष्ठ 6
4 तरूण राजस्थान, 31 अक्टूबर, 1927, पृष्ठ 15
5 राजस्थान, 23 सितम्बर 1935, पृष्ठ 14
6 राजस्थान केसरी, 2 अक्टूबर, 1921, पृष्ठ 2
7 2 अक्टूबर, 1921, पृष्ठ 15
8 राजस्थान, 13 मार्च, 1935, पृष्ठ 15
9 अर्जुन, 1 दिसम्बर, 1935, पृष्ठ 13
10 राजस्थान, 28 जनवरी, 1935, पृष्ठ 15
11 नवज्योति, 9 अगस्त, 1937, पृष्ठ 2
12 किसान संदेश, जुलाई, 1947, पृष्ठ 5
13 नवज्योति, 14 अप्रेल, 1947, पृष्ठ 14
14 नवज्योति, 7 अक्टूबर, 1937, पृष्ठ 6
15 नवज्योति, 2 अप्रेल, 1942, पृष्ठ 5
16 प्रजासेवक, 18 फरवरी, 1941, पृष्ठ 13
17 प्रजावेवक, 13 सितम्बर, 1941, पृष्ठ 7
18 प्रजासेवक, 14 जनवरी, 1941, पृष्ठ 11
19 लेकमत, जनवरी, 1942, पृष्ठ 5

फार्मेसी, सुधासिंधु औषधी[1] आदर्श प्रिटिंग प्रेस केसरगंज अजमेर[2], मशहूर नागपुरी संतरा और मौसमी[3] कलम कमला रसायन चर्म रोग नाशक[4] भारतीय रूंध और पाकिस्तान का नया नक्शा मूल्य 5, राजस्थान पुस्तक भण्डार[5], रोहताश तथा जीईसी के विलायती पंखे खरीदे[6], मैसूर की बत्तीयां इस्तेमाल करें, नोटिस[7], संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरूष पूज्य महात्मा गांधी की अमरवाणी केवल चार आने में लीजिए। (राजस्थान पुस्तक भण्डार, अलवर)[8], बिच्छू के काटने की अकसीर दवा, एण्टस्कार्पियन 'कोडक फिल्म, कोडक केमरा[9], खण्डेलवाला वैश्य सम्मेलन[10], वायर फिटिंग के लिए दी चटवानी इन्डस्ट्रीज अलवर[11], गृहस्थ का सुख उसके बच्चों पर निर्भर है। बालामृत जोन्स ग्राइपवाटर[12], तेज प्रताप में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए। अदालती नोटिस, मनोरंजन के साधन भारद्वाज ट्रेनिंग कम्पनी होप सर्कल अलवर[13], लौकोपकारक फार्मेरयूटिकल वर्क्स अलवर, रक्त शोधक साधन, गोविन्द खालसा[14], नैत्रसुख दवा[15], राधाकान्त प्रिंटिंग प्रेस अलवर यदि आप अपने व्यापार को अधिक से अधिक जनता की दृष्टि से लाभ उठाना चाहते हैं तो तेज प्रताप में विज्ञापन देकर आशाओं की पूर्ति को अपनी ओर आता देखिए। राजस्थान का प्रमुख पत्र, सचित्र साप्ताहिक प्रजामित्र के मूल्य में रियायत[16] अलवर राज्य पताका बीड़ी, टैक्सी कार और लाउडस्पीकर की सुंदर व्यवस्था, हमारे यहां से प्रकाशित पाठ्य पुस्तकें, बेट्री चार्जिंग, पंजाब इंजिनियर्स वर्क्स, आयुर्वेदिक मेडिकल हाल[17], ग्रामोन्नति का आधार ग्राम्य सुधार, डायबटीज मेडिसिन, अदालती नोटिस[18], लिमटन की घड़ियां, लिमटन टाइम योर डेवोशन्स लिमटन वॉच कम्पनी, कलकत्ता[19], स्वप्न विज्ञान, वृक्ष विज्ञान पुस्तक[20], राजस्थान का राष्ट्रीय साप्ताहिक तरूण राजस्थान विज्ञापनदाताओं के लिए अपूर्ण अवसर, सच्चा स्वराज बहुत थोड़ी प्रतिया बची है।[21] ऐजेनों फेल मलेरिया की दवाई, अजीब व गरीब ब्लॉक[22], हिन्दी की उत्तम नई पुस्तकें[23], बालजीवन घुट्टी, सनलाइट ऑफ इंडिया[24], ज्ञानेश्वर गीता हिन्दी में[25], साप्ताहिक अर्जुन में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।[26] स्वरपंचानन मलेरिया की अचूक दवा, गभवती और पतिता आश्रय देकर पुण्य कमाये[27], कामनिया ऑयलः लम्बे काले सुंदर बाल[28], प्रकाश का ऐतिहासिक चित्र नरसिंह भक्त[29], भारत

---

1 प्रजासेवक, 22 अप्रेल, 1941, पृष्ठ 6
2 नवज्योति, 7 अक्टूबर, 1940, पृष्ठ 7
3 प्रजासेवक, 13 सितम्बर, 1945, पृष्ठ 3
4 अलवर पत्रिका, 10 नवम्बर, 1941, पृष्ठ 5
5 अलवर पत्रिका, 10 नवम्बर, 1941, पृष्ठ 6
6 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 4
7 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 1
8 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 5
9 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 6
10 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 7
11 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 8
12 अलवर पत्रिका, 8 मार्च, 1947, पृष्ठ 9
13 तेजप्रताप, पृष्ठ 2, 6
14 स्वतंत्र भारत, 18 जनवरी, 1947, पृष्ठ 6, 2
15 स्वतंत्र भारत, 24 फरवरी, 1947, पृष्ठ 1
16 तेजप्रताप, 10 अक्टूबर, 1937, पृष्ठ 12
17 अलवर पत्रिका
18 तेजप्रताप, 12 फरवरी, 1934, पृष्ठ 12, 2
19 सचित्र दरबार, 27 जून, 1947, पृष्ठ 9
20 नवज्योति, मार्च, 1937, पृष्ठ 17
21 राजस्थान, 4 जनवरी, 1926, पृष्ठ 10(घ)
22 तरूण राजस्थान, 5 अक्टूबर, 1925
23 प्रताप, 5 जुलाई, 1918, पृष्ठ 12
24 प्रजासेवक, 14 मार्च, 1945, पृष्ठ 7
25 प्रजासेवक, 25 जनवरी, 1941, पृष्ठ 5
26 अर्जुन, 22 अप्रेल, 1935
27 नवज्योति, दिसम्बर, 1938, पृष्ठ 6
28 तरूण राजस्थान
29 सचित्र दरबार, 11 जुलाई, 1940

इलेक्ट्रिक एण्ड इण्डस्ट्रियल कॉरपोरेशन लिमिटेड अलवर[1], विवाह हेतु कन्या की आवश्यकता[2], हिन्दुस्तान कोपरेटिव इन्सोरेंस सोसायटी लिमिटेड कंपनी[3], हिन्दुस्तान की कहानी, पं. नेहरू की नयी पुस्तक, आत्मकथा, एकमहान, चुनौति राजस्थान–पुस्तक भण्डार अलवर[4], सर्वोदय प्रेस[5], हेप्पी स्कूल अलवर में[6], अरावली प्रेस सस्ता, सस्ता, सुंदर रंग, रोशन वार्निश, स्वतंत्र भारत में विज्ञापन दीजिए। घड़ी, रेडिया व लाइट स्पीकर्स खरीदने, मरम्मत फटाने व किराये पर लेने के लिए मिलिए भवानी सहाय शर्मा, प्रो. न्यूमैन एण्ड कंपनी 90, बालक कनाट सर्कस (नई दिल्ली)।[7] समाचार पत्रों के सम्पूर्ण अध्ययन से यह विदित हो जाता है कि स्वतंत्रता काल में भी विज्ञापन की दुनिया बड़ी तिलिस्मी थी। जिससे उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए हर संभव प्रयास किये जाते थे। लेकिन यह जरूर है कि समाचार पत्रों पर व्यवसायिकता कितनी भी हावी हो समाचार पत्रों में अश्लील विज्ञापन नहीं के बराबर छपते थे। अश्लील विज्ञापनों को महामना पंडित मदन मोहन मोलवीय जी बड़ा बुरा मानते थे।

❖◆❖

1 स्वतंत्र भारत, 1 दिसम्बर, 1947
2 स्वतंत्र भारत, 15 मार्च, 1947, पृष्ठ 5
3 स्वतंत्र भारत, 22 फरवरी, 1947, पृष्ठ 8
4 स्वतंत्र भारत, 10 मई, 1947, पृष्ठ 1
5 स्वतंत्र भारत, 14 जून, 1947 पृष्ठ 3
6 स्वतंत्र भारत, 5 जुलाई, 1947, पृष्ठ 5
7 स्वतंत्र भारत, 23 जुलाई, 1947, पृष्ठ 4